कन्हैया लाल बसन्तलाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय मीरजापुर

दिनांक : ३१ जनवरी, 1998

प्रमाणित किया जाता है कि कु0 गीतांजली श्रीवास्तव शोधछात्रा, इतिहास विभाग, कन्हैया लाल बसन्तलाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मीरजापुर ने पूर्वान्चल विश्वविद्यालय की पी–एच0डी0 अनुच्छेद धारा के अनुसार पूर्ण समय तक कार्य करते हुये अपना शोध प्रबन्ध पूर्ण कर लिया है। पी–एच0डी की उपाधि प्राप्ति के निमित्त किया गया शोध मौलिक है इस शोध प्रबन्ध का शीर्षक "हरिजन–उद्धार आन्दोलन और महात्मा–गांधी" है।

31/01/98

(डॉक्टर गणेश प्रसाद बरनवाल)
निर्देशक / अध्यक्ष

विषय सूची

	पृ०स०
१. आमुंख	१-३
२. प्रस्तावना	४-७
३. गांधी जी के पूर्व हरिजनों की स्थिति और उनके उद्धार के प्रयत्न	८-३७
४. गांधी जी के अस्पृश्यता सम्बन्धी विचार	३८-६६
५. हरिजन उद्धार और गांधी जी के रचनात्मक कार्यक्रम	६७-९८
६. हरिजन उद्धार और कांग्रेस	९९-१२८
७. हरिजन उद्धार : समाजवादी, साम्यवादी सोच	१२९-१५७
८. अम्बेडकर की सामाजिक संरचना	१५८- १७८
९. निष्कर्ष एवं सुझाव	१७९-१८७

आमुख

गांधी जी की सत्तरवी वर्षगांठ पर प्रसिद्ध वैज्ञानिक आइन्स्टीन ने कहा था कि आने वाली पीढ़ियॉं बमुश्किल यह विश्वास करेंगी कि इस धरती पर हमारे ही हाड़-मांस के सदृश्य एक आदमी (गांधी) चला था। महान वैज्ञानिक की यह बात गांधी जी को आप्त पुरूष बना देती है। जिसका उन्होंने कभी दावा नहीं किया। भारत के उद्धारक होने के साथ ही गांधी जी भारतीय समाज के अन्यतम शिल्पी थे। पश्चिम के विचारक गांधी जी को महात्मा बुद्ध के बाद भारत का महानतम् सपूत मानते है। लेकिन एक बिडम्बना ही है कि गांधी को गांधी के ही देश में द्विविधा की दृष्टि से देख जाता है। परन्तु मेरी दृढ़ आस्था है कि भारतीय समाज के रोग का एकमात्र कैप्सूल गांधीवाद ही है। शायद इसीलिये प्रसिद्ध उद्योगपति घनश्याम दास बिड़ला ने कहा था कि गांधी की असली जयन्ती तो दो सौ सालों बाद शुरू होगी अर्थात् वह असली सोने का सिक्का है जिसकी समय बीतनें के साथ-साथ कीमत बढ़ती जायेगी।

जिस किसी व्यक्ति के बारे में इस तरह की बातें कही जायेगी, उसके बारे में जिज्ञासा होना स्वाभाविक है। इसके मूल प्रेरक मेरे पूज्य पिता स्वर्गीय श्री कन्हैया लाल श्रीवास्तव एडवोकेट है, जिन्होंने अपने एक परम मित्र द्वारा लखनऊ विश्वविद्यालय से गांधी अर्थनीति पर शोध प्रबंध प्रस्तुत कर पी एच.डी. प्राप्त करने का सुसमाचार सुननें के बाद अपनी संतान से भी गांधी जी पर शोध कराने का मन बनाया था। हम उनकी दो संताने है। भईया विज्ञान का स्नातकोत्तर छात्र था और मै स्नातक अंतिम वर्ष की छात्रा। इस बीच काल के क्रूर हाथो ने मेरे पिता जी को हमेश-हमेशा के लिये छीन लिया। वास्तव में यह शोध प्रबंध उन्ही की अतृप्त इंच्छा का मूर्त स्वरूप है जो इस रूप में प्रस्तुत है और उन्हीं को सर्मापत है।

के० बी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मीरजापुर के इतिहास विभाग से स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त करने के बाद गांधी जी पर शोध प्रबंध प्रस्तुत करने की इच्छा प्रबल हुई तो रीडर तथां विभागाध्यक्ष डॉक्टर गणेश प्रसाद बरनवाल ने 'महात्मा गांधी और

हरिजन-उद्धार आन्दोलन' पर शोध करने का सुझाव दिया और शोध प्रबंध हेतु उन्होंनें अपना मार्गदर्शन प्रदान करने की अनुमति दी। डॉ० बरनवाल ने बहुत आत्मीयता से इसे पूरा कराया, उन्हें मेरा बारम्बार प्रणाम है। 'महात्मा गांधी और हरिजन-उद्धार आन्दोलन' विषय को शोध प्रबंध का आयाम देने में, वर्तमान में मेरे लघु परिवार के, सच्चे संरक्षक अर्थशास्त्र विभाग में रीडर तथा विभागाध्यक्ष डॉक्टर नन्द जी चौबे है। वे मेरे निकटतम पड़ोसी है। गांधी जी की अर्थनीति विषय पर लखनऊ विश्वविद्यालय से आपने डाक्टरेट की उपाधि धारण की है। यह मेरे लिये बहुमूल्य उपयोग का सिद्ध हुआ। वास्तविकता तो यह है कि प्रस्तुत शोध प्रबंधन में उनका 'लायन्स शेअर' है। मेरे ऊपर उनका अप्रर्वनीय उपकार है।

इस शोध प्रबंध को तैयार करने में गांधी विद्या संस्थान, राजघाट, वाराणसी, लाजपत राय स्मारक पुस्तकालय, नारघाट, मीरजापुर, के०बी०स्नातकोत्तर महाविद्यालय मीरजापुर आदि ग्रन्थागारों से जो सुविधा मिली उसके लिए मैं उनकी ऋणी हूँ। महाविद्यालय परिवार के डॉ० देवेन्द्र नाथ दूबें, डॉ० मदन गोपाल श्रीवास्तव तथा प्रोफेसर अखिलेश्वर राम जायसवाल के प्रति विशेष आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंनें समय-समय पर अपने बहुमूल्य सुझावों द्वारा इस शोध प्रबंध को आगे बढ़ानें में मद्द की।

यह कार्य पूज्यनीय माता जी श्रीमती सुव्रता श्रीवास्तव के आर्शीवाद और अहेतुक कष्ट साध्य के बिना पूर्ण नहीं हो सकता था, जिन्होंनें ऐसी कठिन पारिवारिक परिस्थितियों में भी मेरा उत्साह वर्द्धन किया और शैथिल्य आने पर ढ़ाढ़स बंधाया। शारीरिक रूग्णता की परवाह किये बिना उन्होंनें इसके लियें जो कष्ट उठाया, उसकी शब्दों में भरपायी नहीं की जा सकती । मॉ बिन्ध्यवासिनी से प्रार्थना है कि वह उन्हें निरोग रखें, बस इतनी ही कामना है। भइया नीलमणि श्रीवास्तव, भाभी शालिनी श्रीवास्तव के प्रति किन शब्दों में अपनी श्रद्धा व्यक्त करूँ, जो घर से डेढ़ सौ किलो मीटर दूर रहकर भी निरन्तर शोध कार्य को जारी रखने का सात्विक निर्देश देते रहे और शिथिलता दिखाई पड़ने पर डांटा-दुलारा। उनको मेरा हार्दिक प्रणाम है।

यह शोध प्रबंध के०बी० महाविद्यालय मीरजापुर के प्राचार्य प्रो० माता प्रसाद जायसवाल के प्रति कृतज्ञता प्रकट किये बिना सम्भव ही नहीं था। इसकी पूर्णता में जरूरी पुस्तकों को पुस्तकालय में मंगवाया, अपने आप में उनका आर्शीवाद है। पुनः उन्हें प्रणाम करती हूँ। अन्त में कृष्णा टाइपराइटिंग विद्यालय, मीरजापुर के संचालक श्री निर्भय कुमार अग्रवाल और उनके सहयोगी कम्प्यूटर आपरेटर श्री सुशील कुमार दूबें एवं श्री नुरूल इस्लाम को हार्दिक धन्यवाद देती हूँ, जिन्होंनें बड़े मनोयोग से कम्प्यूटर टाइपिंग का कार्य समय से किया। प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से जिन विद्धानों के विचार का इस शोध प्रबंध में समावेश किया गया है, उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ।

गीतान्जली श्रीवास्तव

गीतान्जली श्रीवास्तव